The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 2 | February 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

छत्तीसगढ़ की पंडवानी कला में तीजन बाई का योगदान

डॉ0 कमलेश कुमार शुक्ला
विभागाध्यक्ष इतिहास, सी दुबे स्नातकोत्तर.एम.,
महाविद्यालय बिलासपुर, (छ. ग.)

संतोष कुमार
शोधार्थी

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted on: 12-02-2025

Published on: 14-03-2025

Keywords:
छत्तीसगढ़, महाभारत की कहानियों, दिल्ली

ABSTRACT

छत्तीसगढ़ की लोककला महाभारत की कहानियों को गाते हुए प्रस्तुत "पंडवानी" करने की एक विशिष्ट शैली है। इस कला को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने में तीजन है। उनका गायन बाई का अभूतपूर्व योगदान रहा, प्रस्तुति शैली और कला के प्रति समर्पण ने पंडवानी को भारतीय लोककला की मुख्य धारा में स्थापित किया। यह शोधपत्र उनके जीवन-, उनकी कला यात्रा और छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में उनके योगदान को उजागर करता है। भारत विविध लोककलाओं का देश है, जिनमें पंडवानी का विशेष स्थान है। छत्तीसगढ़ की यह परंपरागत कथागायन - शैली महाभारत की कहानियों पर आधारित होती है। इस कला को वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय बनाने में तीजन बाई की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। उनके प्रदर्शन में अद्वितीय ऊर्जा, भावनात्मक गहराई और नाटकीयता देखने को मिलती है, जिससे दर्शक मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15030083

तीजन बाई का परिचय – तीजन बाई का जन्म 24 अप्रैल 1956 को गनियारी गांव, जिला दुर्ग, छत्तीसगढ़ में हुआ था। वे एक गरीब परिवार में जन्मी थीं और उनके पिता का नाम हुनुकलाल परधा और माता का नाम सुखवती था। नाना बृजलाल उन्हें बचपन से ही महाभारत की कहानियां सुनाते थे जिससे ये कहानियां उन्हें बचपन से ही याद हो गई थी। उनकी इसी प्रतिभा को देख कर उमेद सिंह ने उन्हें अनौपचारिक प्रशिक्षण दिया जिससे वे महज 13 वर्ष की बाल्यावस्था में मंच प्रदर्शन किए। तीजन बाई से पहले महिलाएं बैठकर पंडवानी गाती थी। जिसे वेदमती शैली कहां जाता है तथा पुरुष खड़े होकर कापालिक शैली में गाते थे तीजन बाई भी खड़ी होकर कापालिक शैली में गाने वाले पहली महिला पंडवानी गायिका बनी।

पंडवानी लोककला का संक्षिप्त परिचय - पंडवानी छत्तीसगढ़ की एक पारंपरिक कथागायन शैली है-, जिसमें महाभारत की कहानियों को नाटकीय ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। यह मुख्यतः दो शैलियों में प्रस्तुत की जाती है:

1. वेदमती शैलीजिसमें कलाकार बैठकर गाते हैं। -

2. कापालिक शैली - जिसमें कलाकार खड़े होकर नृत्य और अभिनय के साथ गाते हैं। तीजन बाई कपार्चा शैली की अग्रणी कलाकार रही हैं, जिन्होंने इसे जीवंतता प्रदान की।

बचपन और प्रारंभिक संघर्ष – तीजन बाई परधान जनजाति से थीं, जहां महिलाओं का पंडवानी गाना वर्जित था। बचपन में ही उन्होंने अपने नाना ब्रजलाल यादव से यह कला सीखी। कम उम्र में ही उन्होंने गाँव में गाना शुरू किया, लेकिन समाज ने इसे स्वीकार नहीं किया। महिलाओं के लिए मंच पर पंडवानी प्रस्तुत करना कठिन था, फिर भी उन्होंने संघर्ष किया। 13 वर्ष की उम्र में पहली प्रस्तुति दी, लेकिन उन्हें लंबे समय तक उपेक्षा और आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। बावजूद इसके, उनका जुनून उन्हें आगे बढ़ाता रहा।

पहली प्रस्तुति और पहचान – तीजन बाई ने पहली पंडवानी प्रस्तुति 13 वर्ष की उम्र में अपने गाँव गनियारी में दी। उन्होंने अपने नाना ब्रजलाल यादव से यह कला सीखी थी और पारंपरिक रूप से पुरुषों के वर्चस्व वाली इस विधा में कदम रखा। शुरुआत में समाज ने एक महिला के पंडवानी गाने को स्वीकार नहीं किया, लेकिन उनकी अनूठी शैली और जोश ने धीरेधीरे - लोगों का ध्यान आकर्षित किया।

राष्ट्रीय स्तर पर पहचान – तीजन बाई की राष्ट्रीय स्तर पर पहचान 1980 के दशक में बनी, जब उनकी प्रतिभा को छत्तीसगढ़ से बाहर बड़े मंचों पर सराहा जाने लगा। उनकी प्रभावशाली पंडवानी प्रस्तुति प्रसिद्ध रंगकर्मी हबीब तनवीर तक पहुँची, जिन्होंने उनकी कला को राष्ट्रीय मंच दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1980 में दिल्ली में आयोजित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में उन्होंने पहली बार बड़े मंच पर प्रस्तुति दी, जहाँ दर्शकों और कला समीक्षकों ने उनकी नाटकीय शैली और गायन प्रतिभा की खूब प्रशंसा की। इसके बाद, उन्हें राष्ट्रीय दूरदर्शन और अन्य सांस्कृतिक आयोजनों में बुलाया जाने लगा।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पंडवानी की पहचान – तीजन बाई ने न केवल भारत में, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पंडवानी को पहचान दिलाई। 1980 के दशक में, जब उन्होंने भारत के प्रमुख सांस्कृतिक आयोजनों में अपनी प्रस्तुतियाँ दीं, तब विदेशी कलाप्रेमियों ने भी उनकी कला की सराहना की। इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, स्विट्जरलैंड, मॉरीशस जैसे देशों में उन्होंने महाभारत की कहानियों को अपनी अनूठी कापालिक शैली में प्रस्तुत किया, जिससे पंडवानी को वैश्विक स्तर पर लोकप्रियता मिली।

विदेशों में भारतीय दूतावासों और अंतरराष्ट्रीय कला महोत्सवों में उनकी प्रस्तुतियों ने पश्चिमी दर्शकों को भारतीय लोकगायन की समृद्ध परंपरा से परिचित कराया। 1987 में ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के सामने उनकी प्रस्तुति ने उन्हें विशेष पहचान दिलाई। इसके बाद उन्हें कई अन्य देशों में आमंत्रित किया गया।

पंडवानी में अभिनय का महत्व – पंडवानी में अभिनय का महत्व अत्यधिक है, क्योंकि यह केवल गायन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें नाटकीयता और अभिनय का भी एक महत्वपूर्ण योगदान होता है। पंडवानी एक ऐसी कला है जिसमें महाभारत

की कथाओं को संगीत और अभिनय के साथ प्रस्तुत किया जाता है। तीजन बाई जैसी कलाकारों ने इस शैली में अभिनय को प्रमुख स्थान दिया। उनका हावभाव-, चेहरे के भाव और शारीरिक मुद्रा कथाओं को जीवंत बनाती हैं।

नवाचार और शैलीगत बदलाव - पंडवानी शैली में नवाचार और शैलीगत बदलाव ने इस पारंपरिक लोक कला को समृद्ध और समकालीन बना दिया है। तीजन बाई ने पंडवानी में न केवल गायन बल्कि नाटकीयता को भी जोड़ा, जिससे इसे एक नई दिशा मिली। पारंपरिक पंडवानी में गायन और अभिनय की गहरी जड़ें थीं, लेकिन तीजन बाई ने इसे अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए अपने हावभाव और शारीरिक मुद्राओं का इस्तेमाल किया। इसके अलावा-, उन्होंने कापालिक शैली को अपनाया, जिसमें गायन के साथसाथ नाटकीय प्रदर्शन भी शामिल होता है।-

पंडवानी और महिला सशक्तिकरण - पंडवानी और महिला सशक्तिकरण का गहरा संबंध है, खासकर तीजन बाई जैसे कलाकारों के योगदान से। पारंपरिक पंडवानी में यह कला मुख्य रूप से पुरुषों तक सीमित थी, लेकिन तीजन बाई ने इस रूढ़िवादिता को तोड़ा। छत्तीसगढ़ की सामाजिक संरचना में जहां महिलाओं को सार्वजनिक मंचों पर आना मना था, वहीं तीजन बाई ने पंडवानी में अपनी जगह बनाई और अपनी कला से महिलाओं के लिए नए रास्ते खोले। उन्होंने इस कला को न केवल अपने लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ी की महिलाओं के लिए एक सशक्त मंच बना दिया। उनकी सफलता ने यह साबित किया कि महिलाएं किसी भी पारंपरिक कला में पुरुषों के बराबर या उनसे बेहतर हो सकती हैं। तीजन बाई का योगदान महिला सशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में देखा जाता है, क्योंकि उन्होंने अपनी कड़ी मेहनत और संघर्ष से न केवल पंडवानी को नया रूप दिया, बल्कि महिलाओं को अपनी कला के माध्यम से स्वतंत्रता और सम्मान का अहसास कराया।

प्रमुख पुरस्कार और सम्मान - उन्होंने अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति, भाषा और परंपराओं को सहेजा और आगे बढ़ाया। तीजन बाई को उनके योगदान के लिए कई प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले, जिनमें प्रमुख हैं -

1. पद्मश्री)1988)
2. पद्मभूषण)2003)
3. पद्मविभूषण)2019)
4. संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार)1995)
5. राष्ट्रीय तानसेन सम्मान
6. छत्तीसगढ़ राज्य अलंकरण पुरस्कार

उनकी इस विशिष्ट उपलब्धि के लिए उन्हें जापान में प्रतिष्ठित फुकुओका पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन व्यक्तियों को दिया जाता है जो एशियाई संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इसके अतिरिक्त,

तीजन बाई ने 1980 में भारत की सांस्कृतिक राजदूत के रूप में इंग्लैंड, फ्रांस, स्विट्ज़रलैंड, जर्मनी, तुर्की, माल्टा, साइप्रस, रोमानिया, और मॉरीशस जैसे देशों की यात्रा की और वहाँ अपनी प्रस्तुतियाँ दीं।

युवाओं को प्रेरणा और प्रशिक्षण – तीजन बाई ने पंडवानी कला को जीवित रखने और उसे समृद्ध करने के लिए कई युवाओं को प्रेरित और प्रशिक्षित किया। उनके मार्गदर्शन में, अनेक युवा कलाकारों ने इस पारंपरिक कला को अपनाया और उसे आगे बढ़ाया। वे यह मानती थीं कि पंडवानी केवल गायन नहीं, बल्कि एक संपूर्ण नाट्य कला है, जिसमें अभिनय और संगीत का मेल होता है। उन्होंने न केवल अपनी कला को साझा किया, बल्कि युवा कलाकारों को अपनी शैली में सुधार करने के लिए भी प्रेरित किया।

तीजन बाई के प्रशिक्षण से कई युवा पंडवानी गायकों ने मंच पर अपनी पहचान बनाई। उनकी शिक्षाओं से युवा कलाकारों को यह सीखने को मिला कि किसी भी कला को आत्मसात करने के लिए कड़ी मेहनत और समर्पण जरूरी है। उन्होंने पंडवानी को सिखाते हुए युवाओं को यह सिखाया कि पारंपरिक कला को आधुनिक समय में भी बनाए रखा जा सकता है। उनका योगदान न केवल कला के संरक्षण में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह महिला सशक्तिकरण और सांस्कृतिक धरोहर के प्रसार में भी महत्वपूर्ण रहा है।

उपसंहार - तीजन बाई ने पंडवानी को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया और इसे भारतीय लोक कलाओं में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया। उनके प्रयासों से यह कला आज भी जीवंत है और नई पीढ़ी के कलाकार इसे आगे बढ़ा रहे हैं। उनका जीवन और कार्य कला के क्षेत्र में प्रेरणा का स्रोत बने रहेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वर्मा, आर) .2005). छत्तीसगढ़ की लोककला और परंपराएँछत्तीसगढ़ साहित्य अकादमी। :रायपुर .
2. पाण्डेय, डी) .2010). भारतीय लोक नाट्य और उसकी परंपरासाहित्य भारती प्रकाशन। :दिल्ली .
3. चौबे, एस) .2017). पंडवानीभारतीय लोक कला परिषद। :भोपाल .छत्तीसगढ़ की पारंपरिक गायन शैली :
4. भारतीय लोककला पत्रिका)2015). पंडवानी और तीजन बाई का योगदान, लोकसंगीत विशेषांक।
5. संगीत नाटक अकादमी जर्नल)2020). भारतीय लोक नाट्य की विविध शैलियाँ और पंडवानी।
6. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र)IGNCA) शोधपत्र)2018). लोकगायन परंपरा में महिलाओं की भूमिका।
7. Wikipedia (2024). "तीजन बाई।"
8. IGNCA (2023). "पंडवानी।"एक परिचय :
9. Sangeet Natak Akademi (2022). "Teejan Bai and the Pandavani Tradition"।
10. दैनिक भास्कर, 2019: "पद्म विभूषण सम्मान प्राप्त करने पर तीजन बाई का साक्षात्कार।"

11. द हिंदू, 2021: "लोकगायन की समृद्ध विरासत।"तीजन बाई की यात्रा :

13. बीबीसी हिंदी, 2020: "तीजन बाई और उनकी कला का सफर।"

14. दूरदर्शन)2022). तीजन बाई।(डॉक्युमेंट्री) पंडवानी की अमर गायिका :